सैन्धव लिपि

(I) प्राचीन मेसोपोटामियाई लिपी की तरह हड़प्पाई लोगों ने भी लेखन कला का अविष्कार किया था।

[II] हड़प्पा लिपी का सबसे पुराना नमुना 1853 ई० में मिला था और 1923 तक पुरी लिपी प्रकाश में आ गई किन्तु यह अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

[III] हड़प्पाई लोग कौन सी भाषा बोलते थे और क्या लिखते, पढ़ते थे उनकी इसकी स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है। हम अभी तक इस लिपी को पढ़ने में असमर्थ रहे हैं।

[IV] कुछ लोग इसे द्रवीड़ या आद्य द्रविड़ भाषा से जोड़ने का प्रयास करते है जबकी कुछ लोग इसे संसकृत से तथा कुछ लोग इसे सुमेरी भाषा से जोड़ने का प्रयास करते है। लेकिन स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना कठीन है।

5. पत्थर की मुहरो तथा अन्य वस्तुओं पर हड़प्पाई लेखन लगभग 4000 नमुने पाये गये है। हड़प्पा वासीयों के अभिलेख उतने लम्बे लम्बे नहीं है जितने मिस्त्र और मेसोपोटामिया के। हड़प्पा के इ लेखों में प्रत्येक अभिलेख में 1, या 2 या 4 शब्द ही पाये गये है।

6. अभी तक हड़प्पा लिपि के 400 अक्षर ज्ञात हुए है और यह लिपि सम्भवत: भाव चित्रात्मक लिपि थी सामान्यत: यह लिपि दांये से बांये की ओर लिखि जाती थी कभी कभी इसके पंक्ती बदलने के भी साक्ष्य मिलते है।

7. हड़प्पा की लिपि के संदर्भ में एक बात स्पष्ट नजर आती है कि पुरी हड़प्पा सभ्यता के काल में इस लिपि में कोई परिवर्तन हुआ ही नहीं जबकी अन्य सभी प्राचीन लिपियों में समय के साथ साथ परिवर्तन स्पष्ट रुप से दिखायी देते है। इससे यह सिद्ध होता है कि हड़प्पा की लिपि का उपयोग विस्तृत नहीं था सम्भवत: एक वर्ग विशिष्ट लिखित शब्दो पर आधिपत्य जमाये बैठा था वे क्या लिखते थे और कैसे लिखते थे इसका हमारे पास उत्तर नहीं है।

Note समकालीन मेसोपोटामिया के भाँति हड़प्पा में भी स्कुल थे अथवा नहीं इसकी भी जानकारी हमारे पास नहीं है

(8) सिन्धु लिपि का कम्प्यूटर विश्लेषण सोवियत संघ मे तथा भारत के टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च में 1972 में किया गया था।

(9) हाल ही में बिहार प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी M.K. Verma और बिहार सरकार के उच्च सचिव अनुज पाठक ने इस लिपि को पढ़ लेने का दावा किया है किन्तु इसका अर्थ अभी तक स्पष्ट नहीं है।

(10) हड़प्पा लिपि को पढ़ा क्यों नहीं जा सका है, इसका एक कारण यह है कि कहीं कोई भी भाषिक शिलालेख नहीं मिला है जिसमें सिन्धु लिपि के साथ-साथ वही सामग्री किसी ज्ञात समकालीन लिपि में अंकित हो। जबकी मिस्र का प्राचीनतम लेख इसलिए पढ़ा जा सका क्योंकि कालान्तर में इसके द्विभाषिक शिलालेख पाये गये।

सैन्धव सभ्यता के उद्भव सम्बन्धि विचार धारा

1. यह आश्चर्य एवं खेद का विषय है कि इतनी विस्तृत सभ्यता होने के बावजूद भी इस सभ्यता के उद्भव एवं विकास के सम्बन्ध मे भारी मतभेद है अभी तक की खोज से इस प्रश्न पर कोई भी प्रकाश नहीं पड़ सका है कारण यह है कि इस सभ्यता के अवशेष जहाँ कहीं भी मिले है वह अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में ही मिली है।
2. सर जॉन मार्शल, गॉर्डन चाइल्ड, सर मार्टिमर व्हीलर, इत्यादि पुरातत्वविदो की मान्यता है कि सैन्धव सभ्यता की उत्पत्ति मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हुई है। इन विद्वानों के अनुसार सुमेरियन सभ्यता सभ्यता से प्राचीनतम थी। इन दोनो सभ्यताओं में कुछ समान विशेषताए देखने को मिलती है जो इस प्रकार है —— (B)
   (i) दोनो को लिपि का ज्ञान था।
   (ii) दोनो नगरिय सभ्यताएं थी।
   (iii) दोनो सभ्यताओं के लोग चॉक पर मिट्टी के बर्तन बनाते
   (iv) दोनो के निवासी कांसे और तांबे के साथ साथ पाषाण के लघु उपकरणों का प्रयोग करते थे
   (v) दोनो के भवन कच्ची और पक्की ईटों से बनाये जाते थे
3. उपर्युक्त समानताओं के आधार पर व्हीलर ने सैन्धव सभ्यता को सुमेरियन सभ्यता का एक उपनिवेश बताया है। किन्तु गहराई से विचार करने पर यह मत तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है कारण की दोनो सभ्यताओं ने कलवाह्य विशेषताओं के होते हुए भी कुछ मौलिक असमानताओं

विषमताएं भी है जिनकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते

सैन्धव सभ्यता की नगर योजना सुमेरियन सभ्यता की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित है दोनों के बर्तन, उपकरण, मूर्तियां, मुहरें इत्यादि आकार प्रकार के काफी भिन्न है। यह सही है कि दोनो ही सभ्यताओं के लिपि का प्रचलन था किन्तु दोनो ही लिपियां परस्पर भिन्न है जहां सुमेरियन लिपि में केवल 900 अक्षर मिलते है वही सैन्धव लिपि में केवल 400 अक्षर मिलते है। मेसोपोटामियाई रीति रिवाजों से हड़प्पाई रीति रिवाज बिल्कुल भिन्न थी अतः हम हड़प्पा सभ्यता को सुमेरियन उपनिवेश का परिणाम नही मान सकते है।

4. S. R. Raw के अनुसार सिन्धु सभ्यता के विकास का श्रेय उसी संस्कृति को दिया जा सकता है जो काल क्रम की दृष्टि से उससे प्राचीन हो तथा उसके साथ साथ विद्यमान रही हो, जिसमें परिवर्तन के क्रमिक चरण स्पष्ट हो तथा वे तत्व हो जो सैन्धव सभ्यता को विशिष्टता प्रदान करते है।

5. प्रोफेसर टी. एन रामचन्द्रन, K. N. शास्त्री, पुशालकर S. R. Raw इत्यादि विद्वान वैदिक आर्य को ही इस सभ्यता का निर्माता मानते है परन्तु अनेक विद्वान इसे स्वीकार नही करते क्योंकि दोनो ही सभ्यताओं की रीति रिवाजों, धार्मिक तथा आर्थिक परम्पराओं मे पर्याप्त भिन्नताएं दिखाई देती है, सैन्धव तथा वैदिक सभ्यताओं के मुख्य अन्तर इस प्रकार है।

— [I] वैदिक आर्यो की सभ्यता ग्रामीण एवं कृषि प्रधान थी जबकी सैन्धव सभ्यता नगरीय एवं व्यापार व्यवसाय प्रधान थी

[II] आर्यो के मकान घास फूस तथा बांस की सहायता से बने होते थे जबकी सैन्धव लोग इसके लिए पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे।

[III] सैन्धव सभ्यता में कहीं भी लोहे का प्रमाण नही मिलता है और उनके उपकरण पाषाण एवं कांसे के बने होते थे इसके विपरित वैदिक आर्यो को लोहे का ज्ञान था।

(IV) वैदिक आर्य, इन्द्र, वरुण, अग्नि, मारुत

Scanned with CamScanner

नासत्य इत्यादि देवताओं के उपासक थे वे यज्ञ करते थे और मुर्ति पुजा के विरोधि थे परन्तु सैन्धव लोग मुख्य रूप से मातृदेवी शिव किं पुजा इत्यादि करते थे और मुर्ती पुजक थे

(V) आर्यों का प्रिय पशु अश्व था जिसकी सहायता से वे युधो में विजय प्राप्त करते थे किन्तु सैन्धव वासी अश्व से अपरिचित थे सैन्धववासियों को व्याघ्र एवं हाथीयों का ज्ञान था क्योंकि उनकी मुद्राओं पर इन पशुओं का अंकन हुआ है इसके विपरित वैदिक आर्यों को इसका ज्ञान नही था।

(VI) हडप्पा वासियो का मुख्य पशु (वृषभ (बैल) था जबकी आर्यों का मुख्य पशु गाय थी और गाय को (अघन्या) कहा गया है। आर्यों ने अनेक लड़ाई गायों के लिये लडी थी

(VII) सैन्धववासीयो को लिपि ज्ञान था जबकी आर्यों को लिपि ज्ञान नही था और उनकी शिक्षा मौखिक थी।

इस प्रकार हम देखते है कि आर्य लोग सैन्धव वासियों की तुलना मे काफी पिछडे हुए थे थे लोग सैन्धवसभ्यता के निर्माता कदाई नही हो सकते।

6. -[I] सैन्धव सभ्यता के खुदायी से भिन्न-भिन्न जातियों के अस्थी पंजर प्राप्त होते है ये है - Proto Astrolid, भुमध्य सागरीय, मंगोलीयन, तथा अल्पाईन मुख्य रूप से मोहनजोदडो के निवासी ProtoAstrolide थे

(II) अधिकांश विद्वानो की धारणा है कि सैन्धव सभ्यता के निर्माता द्रविड़ जाति लोग थे S.K. Chatrji ने भाषा विज्ञान के आधार पर यह सिद्ध किया है कि ऋग्वेद मे जिन दास एवं दासियों के उल्लेख है, वे द्रवीड लोग ही थे और द्रवीड लोग ही मुख्यतया अयुक्त चार प्रजातियों से सम्बध थे जिनमें सबसे प्रमुख ProtoAstrolide है और इस प्रकार द्रवीड़ लोग ही सैन्धव सभ्यता के निर्माता थे।

किन्तु यह निष्कर्ष भी संदिग्ध है यदि द्रवीण लोग सैन्धव सभ्यता के निर्माता होते तो उस सभ्यता का कोई अवशेष द्रवीड़ क्षेत्र मे अवश्य मिलता बलुचिस्तान की (ब्राहुई) भाषा को द्रवीड भाषा के साथ सम्बध करने का कोई पुष्ट आधार नही है।

7. [I] फेयर सर्विस, डेल्स इत्यादि पुरातत्वविदो का विचार है कि सैन्धव सभ्यता की उत्पत्ति द० अफगानिस्तान, बालुचिस्तान, सिन्ध तथा पंजाब (पाकिस्तान और उतरी राजस्थान (भारत) के क्षेत्र में इसके पूर्व विकसित होने वाली ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों — जाब, कुल्ली, नाल, आमरी, कोटदीजी, हडप्पा तथा काली बंगा से हुई।

[II] इन ग्रामिण संस्कृतियों के लोग कृषि कर्म तथा पशु-पालन करते थे और विविध अलंकरणो वाले मिट्टी के बर्तन तैयार करते थे

[III] खुदायी से पशु तथा नारी मुर्तियां भी मिली है इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि बालुचिस्तान के लोग मातृ पुजन तथा लिंग की आसन करते है।

[IV] उल्लेखनिय है कि इन संस्कृतियों के कुछ पात्रों पर पिपल की पती हिरण, त्रिभुज इत्यादियों के चित्रकारी पाये गये है जो सैन्धव सभ्यता के पात्रों से भी प्राप्त हुए है।

(V) अत: इस सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता की सैन्धव सभ्यता का विकास इसी क्षेत्र के पुर्वर्ती सभ्यताओं से हुआ है लेकिन यह निष्कर्ष अंतिम नही होगा क्योंकि इन ग्रामिण संस्कृतियों में लिपि तथा मुद्रा का प्रचलन एवं पक्की ईंट का प्रयोग नही हुआ है

(VI) निष्कर्ष → वास्तविकता तो यह है कि हमारे ज्ञान की वर्तमान अवस्था मे सैन्धव संस्कृति के निर्माताओं का प्रश्न असंदिग्ध रूप से हल नही किया जा सकता यह भि सम्भव है कि इस सभ्यता के निर्माता विभिन्न जातियों के मिश्रण रहे हो जिन्होने अपने को एक सांस्कृतिक सुत्र मे आबाद कर लिया हो इस प्रश्न का अंतिम निर्णय भविष्य की खुदायीयों से ही सम्भव है।

//